ISSN : 0976-5255

शोध मंथन

V-3 - 2012

PUBLISHER
Journal Anu Books, Meerut

अनुक्रमणिका

शीर्षक		पृष्ठ
1.	दूर शिक्षा द्वारा अध्यापक-शिक्षा कार्यक्रम बी० एड० (दूर शिक्षा) कार्यक्रम का अध्ययन **अश्वनी**	1-16
2.	लोक देवोपासना (प्राचीन ब्रज में पक्षों और नागों की उपासना **डॉ० लक्ष्मी गौतम**	17-21
3.	पंचायती राज एवं महिला सशक्तिकरण **डॉ० लीना अग्रवाल**	23-39
4.	लोकतंत्र की सार्थकता एवं पंचायती राज **डॉ० नीशा मुन्दड़ा**	41-59
5.	दो अध्यापक हेतु सामाजिक अध्ययन में पाठ योजना **डॉ० दिनेश कुमार**	61-72
6.	वालमीकी रामायण में वैदिक समाज **डॉ० अंञ्जुला राजवंशी, सारिका अग्रवाल**	73-78
7.	भूमण्डलीयकरण के सामाजिक सांस्कृतिक आयाम : भारतीय समाज के विशेष परिप्रेक्ष्य में विवेचन **डॉ० जी० एल० शर्मा**	79-89
8.	बरखा रानी ज़रा जमके बरसो **डॉ० पी० के० आर्य**	91-97
9.	कुमांऊनी आवासीय वास्तुशिल्प : क्षेत्रीय विविधता **डॉ० मदन मोहन जोशी**	99-112
10.	मानवाधिकार एवं मीडिया : विभिन्न जनमाध्यमों के सन्दर्भ में **डॉ० राकेश चन्द्र रयाल**	113-125

7 भूमंडलीकरण के सामाजिक सांस्कृतिक आयाम : भारतीय समाज के विशेष परिप्रेक्ष्य में विवेचन

– डॉ. जी. एल. शर्मा*

आधुनिक युग दूरसंचार, सूचना विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं तकनीकी विकास से लबलेज है। चारों ओर भूमंडलीकरण की हवा बह रही है। पूरा विश्व एक छोटी सी दुनियां में सिमट गया है। आज स्थानीय और वैश्विक लोग एक कड़ी में बंध गए हैं। भूमंडलीकरण के कारण ही राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, व्यापारिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक सभी क्षेत्रों में हम एक दूसरे से परिचित हुए हैं। इस प्रकार सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं आर्थिक सम्बन्धों का सम्पूर्ण विश्व तक विस्तार ही भूमंडलीकरण या वैश्वीकरण है। भूमंडलीकरण या वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप कनाडियन दार्शनिक **मार्शल मैक्लुहान** (1911–1980) ने वैश्विक गाँव (Global Village) की अवधारणा का उल्लेख किया है।

आधुनिकीकरण की प्रक्रिया ने, विशेष रूप से सूचना एवं दूरसंचार क्रांति ने, भूमंडलीकरण को सामाजिक–आर्थिक एवं राजनीतिक आधार प्रदान किया। वर्तमान समय में मानव जीवन के अनेक पक्ष, जिन समाजों में हम रहे हैं, हजारों मील दूर स्थित संगठनों और सामाजिक ताने–बाने से प्रभावित होने लगे हैं। विश्व एक घुलीमिली **कंपोजिट कल्चर** वाली सामाजिक व्यवस्था का रूप धारण करता जा रहा है। वैश्वीकरण के द्वारा एक ऐसी नवीन चेतना का उदय हो रहा है, जिससे सम्पूर्ण विश्व के राष्ट्र राज्य अब कई मामलों में एक जगह मिलजुलकर मानव जीवन को अधिकाधिक खुशहाल एवं बेहतर बनाने के लिए एक साथ निर्णय करने लगे हैं।

* "शांति–कुटीर", 81, विश्वेश्वरैया विस्तार, त्रिवेणी नगर, जयपुर (राज.) 302018

भूमंडलीकरण के अनुसार भूमंडली संस्कृति अनेक विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक विधाओं का परिणाम है। उपभोग और उपभोक्तावादी एक समान वैश्विक स्वरूपों का उदभव, एक विश्ववादी सामान्य जीवन शैली की स्वीकारोक्ति, विश्व स्तर पर पारिस्थितिकीय एवं पर्यावरण सम्बन्धों, संकटों एवं खतरों के बारे में चेतना, वैश्विक राजनीति एव आर्थिक व्यवस्थाओं का उदभव, मानवाधिकारों का सभी देशों तक प्रचार–प्रसार, और विश्व के धर्मो मे आदान–प्रदान आदि वैश्वीकरण का ही परिणाम है। अतः वैश्वीकरण एक ऐसी सामाजिक प्रक्रिया है, जिसमें भौगोलिक दबाव कमजोर हो गए हैं।

समकालीन ब्रिटिश समाजशास्त्री **एंथोनी गिडेन्स** (जन्म 1938) ने अपनी पुस्तक **'दि कान्सीक्वेन्सेज ऑफ** मॉडरनिटी' में भूमंडलीकरण की व्याख्या की है। इनके अनुसार आधुनिकता का बहुत बड़ा परिणाम भूमंडलीकरण है, क्योंकि भूमंडलीकरण में समय और स्थान को सामाजिक जीवन में नये सिरे से परिभाषित किया गया है। गिडेन्स इसे समय–स्थान दूरीकरण कहते हैं। इनके अनुसार आज की दुनियां में संचार और उत्पादन तथा विनिमय की जो जटिल व्यवस्था बनी है, उसने सम्पूर्ण स्थानीयता को कमजोर किया है।

तस्मानिया विश्वविद्यालय के **प्रो. मेलकॉम वॉटर्स** के अनुसार भूमंडलीकरण की प्रक्रिया में भूगोल तथा राष्ट्रीय सीमाओं के दबाव और बंधन धूमिल हुए हैं। इनके अनुसार भूमंडलीकरण एक ऐसी सामाजिक प्रक्रिया है, जिसमें सामाजिक तथा सांस्कृतिक व्यवस्था पर जो भौगोलिक दबाव होते हैं, पीछे हट जाते हैं और लोग भी इस तथ्य से अवगत हो जाते हैं कि अब भौगोलिक सीमाएं बेमतलब हैं। यातायात साधनों का तेजी से बढता नेटवर्क एवं तेज गति की तकनीक ने भौतिक दूरीयों को पाट दिया है।

भूमंडलीकरण ने विश्व को जहाँ अनेक संस्कृतियों सभ्यताओं भाषाओं और जीवन पद्धतियों को से रूबरू कराया वहीं इसने दुनिया भर के राष्ट्र–राज्यों को आर्थिक और सांस्कृतिक सूत्र में बांध दिया है। आज वैश्वीय मुददों का चहुँमुखी फैलाव हो गया है। अब राष्ट्र राज्य के विचार और आर्थिक नीतियाँ क्षेत्रीय सीमाओं को लांघ रही है। भूमंडलीकरण के

अनेक बहुविषयक आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, पर्यावरण, आदि पहलू है। भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया ने स्थानीयता को विश्व के साथ जोड़ा हैं। यह एकता व समरूपता की वह प्रक्रिया है जिसमें सम्पूर्ण विश्व सिमट कर एक हो जाता है। कतिपय विद्वानों के अनुसार पूरी दुनियां को एक भूमण्डलीय गांव (वैश्विक गाँव) के रूप में मानने की अवधारणा ही भूमण्डलीकरण है।

आज जिस भूमण्डलीकरण की हम चर्चा करते हैं, उसका उद्भव लगभग 25 वर्ष पूर्व बहुराष्ट्रीय निगमों के प्रहारों और अनुदारवादी आन्दोलन में मिलता है जिसमें पश्चिमी दुनियां को अपने शिकंजे में जकड़ लिया था और जिसके प्रणेता ब्रिटेन की **थैचर**, जर्मनी के **कोहल** और अमेरिका के **रोनाल्ड रीगन** थे। बहुराष्ट्रीय निगम और बैंक पूरी दुनियां में अपने कदम बढ़ाने लगे और पूँजी एवं मुद्रा पर लगे नियन्त्रणों को तोड़ते हुए विनिवेश और व्यापार के लिए मुक्त द्वार का नारा बुलंद करने लगे। अतः भूमण्डलीकरण की अवधारणा विश्व के बारे में एक एकल समिष्ट के रूप में एक नवीन चेतना के उद्भव को इंगित करती है। परिणामस्वरूप अन्तरराष्ट्रीयकरण की प्रक्रिया को बल मिल रहा है।

अंतरराष्ट्रीयवाद की अवधारणा हमारी 'वसुधैव कुटुम्बकम्' विचारधारा पर आधारित है। पूरे विश्व को एक सूत्र में बांधकर एक समान नजरिये से देखने का दृष्टिकोण अंतरराष्ट्रीयवाद को विकसित करता है। भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया ने सम्पूर्ण विश्व को आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक सूत्र में बांधा है। भूमंडलीकरण से सम्पूर्ण विश्व में इस चेतना का उदय हुआ कि विश्व एक गतिशील संरचित परिवेश है तथा इस प्रक्रिया ने एक विश्व ग्राम की भावना को प्रबल किया। आज भूमण्डलीकरण के युग में सम्पूर्ण विश्व एक इकाई बन गया है। आज भूमण्डलीकरण के कारण ही विश्व के किसी भी देश में भूकम्प, बाढ़, अकाल, महामारी की स्थिति आती है, तो सभी पीड़ित देश के सहायता के लिए तत्पर रहते हैं।

संयुक्त राष्ट्र संघ के मंच से अपनी सहस्त्राब्दि घोषणा (सितम्बर 2000) में विश्व की हस्तियों ने जोर दिया था कि वैश्वीकरण को सुनिश्चित करना सबको शक्तिशाली बनाने की दिशा में एक ठोस कदम है। संयुक्त

राष्ट्र महासचिव **बान की मून** के अनुसार यदि वैश्वीकरण को सफल होना है तो जनता की भागीदारी भी होनी चाहिए। भूमंडलीकरण की प्रक्रिया से ही प्रत्येक देश में उच्च गति से विकास, रहन–सहन का उच्च स्तर, अन्तरराष्ट्रीय उत्पादों की स्थानीय बाजार तक पहुँच, व्यक्तियों के लिए रोजगार के नए अवसर आदि संभव हुए है। भूमंडलीकरण का उद्देश्य एक सार्वभौमिक मानव समाज का निर्माण तथा सम्पूर्ण विश्व को वसुधैव कुटुम्बकम के सूत्र में बाँधना है।

प्रो. दीपांकर गुप्ता (Mistaken Modernity, 2001) के अनुसार भूमंडलीकरण से समाज में एक समान परिवर्तन नहीं आता है। प्रो. गुप्ता ने भारत में वैश्वीकरण एवं आधुनिकीकरण के परिणामों को पश्चिम का नशा (मेजवगपपिबंजपवद) कहा हैं। **गिडेन्स** अनुसार भूमंडलीकरण ने कहीं तो मैक्डोनाल्ड को स्थापित किया तो दुसरी ओर विश्व के कई हिस्सों में आज भी जनता के लिए पीने योग्य शुद्ध पानी भी नहीं है। आधुनिक सांस्कृतिक समाजशास्त्री **प्रो. स्टुअर्ट हॉल** (जन्म 1932) के अनुसार भूमंडलीकरण की प्रक्रिया समाज में असमानता हो उन्नत करती है। इसके अनुसार समाज का गरीब वर्ग आज भी इसके लाभ से वंचित है तथा सम्पूर्ण विश्व दो हिस्सों में बट गया है एक तरफ विकसित देश हैं तो दूसरी तरफ विकासशील और अल्पविकसित देश।

भारत में भूमंडलीकरण का प्रारम्भ 1991 में तत्कालीन प्रधानमंत्री नरसिम्हाराव के कार्यकाल में हुआ। आर्थिक और राजनीतिक भूमंडलीकरण के साथ–साथ भारत में सांस्कृतिक भूमंडलीकरण की प्रक्रिया की शुरूआत हुई। आधुनिक काल से पूर्व धर्म का वैश्वीकरण अधिक था। बौद्ध धर्म का उद्‌भव स्थल भारत होने के बावजूद भी इसकी व्यापकता एशिया के कई अन्य देशों में थी। आधुनिक युग के आगमन के साथ ही प्रजातंत्र तथा पूँजीवाद का भी आगमन हुआ। शिक्षा, विज्ञान ने धर्म के वैश्वीकरण को हाशिए पर ला दिया और अब पूँजीवादी अर्थव्यवस्था का बहुत बड़ा प्रभाव संस्कृति पर पड़ा। **केविन्स रोबिन्स** के अनुसार अब जब आर्थिक गतिविधियों का भूमंडलीकरण रहा है, तो सांस्कृतिक रूपान्तरण का भी एक नया दौर आ रहा है। अब विश्व में सार्वभौमिक सांस्कृतिक उत्पादन उत्पन्न हो रहे हैं अर्थात संस्कृति का उत्पादन वस्तुओं की तरह हो रहा है।

सातची और सातची के अनुसार भूमंडलीकरण के युग में संस्कृति का मिलन हो रहा है। अब सभी लोग राष्ट्र–राज्य की सीमाओं को पारकर एक जैसी संस्कृति को अपनाने लगे हैं। अब उपभोग की वस्तुएँ एक समान हो गई हैं जैसे– पीजा, टूथपेस्ट, कपड़ों के ब्रान्ड, टीन में बंद खादय पदार्थ आदि।

भारतीय समाज ऐतिहासिक दृष्टि से अनेक सभ्यता एवं संस्कृतियों का समागम रहा हैं। लेकिन आधुनिक भूमंडलीकरण ने एक नवीन विश्वव्यापी साझा संस्कृति को उत्पन्न किया है। आज की संस्कृति की उपज पूँजीवाद करता है। इसके उत्पादन के लिए बड़े–बड़े निगम होते हैं। दुनियां के विभिन्न देशों की संस्कृति को ये निगम नजरअंदाज नहीं कर सकते। जैसे – पश्चिम देशों में अगर मेक्डोनाल्ड माँसाहारी कोफ्ते रखता है तो भारतीय संस्कृति के अनुरूप भारत में उसे शाकाहारी कोफ्ते ही देने होंगे। इन वैश्वीय सांस्कृतिक निगमों के अनुकूलता की प्रवृत्ति को थियोडोर लेविट "एथनिसीटी का भूमंडलीकरण" कहते है। इनके अनुसार भूमंडलीकरण की प्रक्रिया में स्थानीय सांस्कृतिक पदार्थो (ब्नसजनतंस दक म्जीदपब डमतबींदकंसप्रंजपवद)को विश्व के अन्य भागों में पहुँचाया जाता है। फलस्वरूप सांस्कृतिक एवं एथनिक बाजारीकरण की प्रक्रिया का विकास होता है।

भूमंडलीकरण के सकारात्मक परिणाम : एक दृष्टि में –

1. आर्थिक सुदृढता 2. औद्योगीकरण एवं उत्तरऔद्योगीकरण 3. महिलाओं की प्रस्थिति में सुधार 4. सम्पूर्ण मानव जाति के जीवन में गुणात्मक बदलाव 5. नवीन व्यवसायों एवं पेशों का उदय 6. आधारभूत संरचना का विकास 7. सांस्कृतिक समरसता में वृदि्ध 8. संचार, सूचना एवं साइबर क्रांति 9. मानव संसाधन का विकास 10. राजनीतिक जागरूकता में अभिवृद्धि 11. लोकतांत्रीकरण की प्रक्रिया का विकास 12. आधुनिकीकरण एवं उत्तर–आधुनिकीकरण।

वैश्विक स्तर पर भूमंडलीकरण ने सर्वदेशीय संस्कृति को उत्पन्न किया है। पूँजीवाद और प्रजातंत्र के इस युग में धर्मनिरपेक्ष संस्कृति को प्रोत्साहन दिया जाता है। भारत ने भी अपने संविधान में स्वयं को

धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र घोषित किया है। भूमंडलीकरण के माध्यम से जो संस्कृति दूर–दराज के क्षेत्रों में पहुँचती है, वह सर्वदेशीय होती है। अर्थात जब अनेक संस्कृतियाँ स्थानीय संस्कृति पर अपना प्रभाव डालती हैं तो फलतः जो संस्कृति उभरती है वह सर्वदेशीय होती है। जैसे – मुम्बई में देश के विभिन्न राज्यों की भिन्न–भिन्न संस्कृतियों के लोग निवास करते हैं, सभी की अपनी भाषा, पहनावा, परम्परा, रीति–रिवाज हैं। यह स्थिति **'कॉस्मोपॉलिटन कल्चर'** को जन्म देती है। इन सभी लोगों ने सामान्य अन्तःक्रिया के लिए "मुम्बईया भाषा" को अपना लिया है। यह सर्वदेशीय संस्कृति है जो कि भूमंडलीकरण की सांस्कृतिक देन है।

भूमंडलीकरण ने भारतीय जीवन के कई सांस्कृतिक पहलुओं को प्रभावित किया है। सांस्कृतिक उत्पादन को बाजार के माध्यम से बदल दिया है। वैश्वीय व्यापार और बाजार ने उप संस्कृतियों को भी उत्पन्न किया है। अब भारत में भी एक **नई लोकप्रिय संस्कृति** (च्वचनसंत ब्नसजनतम) का विकास हो गया है। भारतीय समाज में भी उपभोग संस्कृति का प्रभुत्त्व बढ़ गया है। वस्तुओं का उपभोग अब आवश्यकता या उपयोगिता के कारण नहीं वरन् प्रतीकात्मक हो गया है। अब धीरे धीरे भारतीय समाज भी एक **उपभोग समाज** (ब्वदेनउमत वबपमजल)का रूप ले रहा है।

आर्थिक सुधारों के रूप में उदारीकरण, निजीकरण एवं भूमंडलीकरण (LPG) की प्रक्रिया के कारण भारत में दूर संचार तकनीक का भी विकास हुआ जिसमें मोबाईल, ई–मेल, इंटरनेट आदि हैं। आज भारतीय गाँव भी इंटरनेट से जुड़ गये हैं। कम्प्यूटर सेवाओं में वृद्धि हुई है। दूरसंचार सुविधाओं ने आर्थिक विकास, व्यापार तथा बैंकिंग व्यवहार में भी क्रान्तिकारी परिवर्तन ला दिया है। इसके कारण भारत के स्थानीय समुदाय भी मुख्य धारा से जुड़ गए हैं। अब स्थानीय समुदाय भी अपनी पहचान बनाने में अधिक जागरूक हुए हैं। आज विश्व स्तर पर राजस्थान के लोक नृत्य, लोक नाट्य, हस्तशिल्प, पंचगव्य एवं आयुर्वेद को भी एक विशिष्ट पहचान मिली है।

सांस्कृतिक भूमंडलीकरण के दुष्परिणामस्वरूप आज एक वर्ण संकर संस्कृति उत्पन्न हो रही है। यह संस्कृति का सतही और क्षणिक रूप है।

यह संस्कृति मुख्यतः विस्थापित लोगों की है जिसमें वे लोग न तो पूर्णतः अपनी संस्कृति की जड़ों से जुड़ पाते है और न ही दूसरी संस्कृति को स्वीकार कर पाते है। आज भूमंडलीकरण के युग में पलायन का तत्व भी सामाजिक जीवन की धुरी बन चुका है। आज लोगों का एक जगह से दूसरी जगह निर्वासन, स्थानान्तरण, शरणार्थी समस्या, और घुमंतु पर्यटकों को देखा जा सकता है। इसी तरह स्थानीय मीडिया के बजाए ग्लोबल मीडिया के बढ़ते हुए बाजार और उपभोक्ता संसार को **मीडिया पलायन** कह सकते है। आज भूमंडलीकरण ने पूरी दुनियां को एक विश्व बाजार में बांध दिया है। आज स्थानीय बाजार पर ग्लोबल का प्रभाव पड़ता है तो साथ ही वैश्वीय बाजार पर स्थानीयता का भी प्रभाव पड़ता है।

भूमंडलीकरण ने भारत की स्थानीय एवं लोक संस्कृति को भी प्रभावित किया है। भारत की स्थानीय संस्कृति की अपनी विशेषताएँ हैं। भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण (ASI) की **'भारत के लोग'** (People of India) रिपोर्ट के अनुसार स्थानीय संस्कृति को जाति, भाषा, विवाह, क्षेत्र और धर्म में देखा जा सकता है। भारतीय समाज एक बहुलवादी समाज है। इसकी संरचना कुछ इस तरह की है कि यह सम्पूर्ण देश को एकता के सूत्र में बांधती है। **प्रो. के.एस. सिंह** (एन्थ्रोपोलोजिकल सर्वे ऑफ इंडिया) द्वारा संपादित इस प्रोजेक्ट रिपोर्ट के अनुसार हमारे देश में 91 सांस्कृतिक क्षेत्र हैं। वैश्वीयता ने सांस्कृतिक क्षेत्रों को अपना बाजार बना लिया है। प्रत्येक क्षेत्रीय आवश्यकता के अनुरूप सांस्कृतिक उत्पादन तैयार किया जाता है। ओलिवेत्ती कार्लो के अनुसार जैसे ही कोई सांस्कृतिक उत्पाद तैयार होता है तो उसे तुरन्त क्षेत्रीय बाजार में बेच दिया जाता है। बाजारवाद और स्थानीय सांस्कृतिक उत्पाद एक–दूसरे से जुड़े हुए हैं।

आधुनिक उपभोक्तावादी युग में भूमंडलीकरण के कारण विश्व भर की उपभोक्ता वस्तुऐं स्थानीय बाजार की अभिन्न अंग बन गई हैं। वैश्वीय–स्थानीय सम्पर्क में **थॉमस रॉबिन्स** के अनुसार स्थानीयता भी ताकतवर बनती है। क्योंकि इस प्रक्रिया में स्थानीय उत्पादों को बाजार उपलब्ध होता है। परन्तु कभी–कभी वैश्वीय संस्कृति और बाजार इतने प्रभुत्वशाली होते हैं कि वे स्थानीयता को समाप्त कर देते हैं। कभी–कभी इस सम्बन्ध के परिणामस्वरूप स्थानीय भाषा तीज–त्योहार और

रीति–रिवाज ओझल हो जाते हैं और कुछ अन्य नए सांस्कृतिक प्रतिमान जिनका उद्‌गम अन्य देशों में होता है, स्थानीय स्तर पर प्रभुत्वशाली हो जाते है। जिससे पहचान का संकट उत्पन्न होता है। इस प्रक्रिया में **सामाजिक–सांस्कृतिक प्राधान्य** (Socio-Cultural Hegemony) की अवधारणा काम करती है। सांस्कृतिक प्राधान्य (Cultural Hegemony) की अवधारणा को मार्क्सवादी कलेवर के साथ **एंटोनियो ग्रामशी** (1891–1937) ने प्रस्तुत किया है।

भूमंडलीकरण का प्रत्येक समाज पर सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं लौकिक प्रभाव पड़ता है। वास्तव में भूमंडलीकरण स्थानीयता के साथ जुड़ा होता है। जब इस प्रक्रिया द्वारा आधुनिकीकरण और उत्तरआधुनिकीकरण की अन्तःक्रिया स्थानीय संस्कृति के साथ होती है, तब पहचान की समस्या उत्पन्न होती है। भूमंडलीकरण की आँधी में पॉप संगीत के सामने हमारे शास्त्रीय संगीत का भविष्य क्या होगा। आज भरतनाट्‌यम और ओडिसी नृत्य की बजाए युवाओं का आर्कषण वेस्टर्न डांस की तरफ अधिक है। आज सांस्कृतिक व भूमंडलीकरण की दौड़ में हमारी कई विधाएँ अपनी पहचान खो चुकी हैं। छत्तीसगढ़ की पंडवानी, विन्ध्यप्रदेश का आल्हा, महाराष्ट्र का तमाशा आज अपनी पहचान खो रहे हैं। सांस्कृतिक भूमंडलीकरण ने हमारी एथनिक वेशभूषा को भी प्रभावित किया है। आज युवाओं में भारतीय पहनावे की बजाए पश्चिमी वेशभूषा का प्रचलन अधिक है। बुनियादी रूप से कोई भी सांस्कृतिक उत्पाद उच्च है या निम्न, यह सापेक्षिक है क्योंकि संस्कृति सापेक्षिक होती है, परन्तु हम भारतीयों की अपनी एक विशिष्ट पहचान है। आज सांस्कृतिक भूमंडलीकरण के युग में बहुत बड़ा संकट पहचान का संकट है। **प्रो. योगेन्द्र सिंह** ने अपनी कृति, 'कल्चर चेंज इन इण्डिया' में संस्कृति की भूमंडलीकरण के संदर्भ में पहचान की समस्या को इंगित किया है।

इस प्रकार आधुनिक बाजार अर्थव्यवस्था, मीडिया की शक्ति तथा सूचना तकनीकी तंत्र ने हमारी स्थानीय संस्कृति के सामने पहचान की बहुत बड़ी समस्या पैदा की है। मार्क्सवादी विचारधारा के अनुसार **पहचान**

का संकट (Identity Crisis) पूँजीवादी प्रवृत्तियों की देन है। आज सांस्कृतिक भूमंडलीकरण ने स्थानीय लोगों की भाषा, धर्म, जीवन पद्धति सांस्कृतिक मूल्यों को बहुत प्रभावित किया है। भूमंडलीकरण एक अन्तरराष्ट्रीय आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक प्रक्रिया ही नहीं वरन यह हमारे स्थानीय दिन–प्रतिदिन के जीवन को भी प्रभावित करती है। अतः भूमंडलीकरण जहाँ लोगों में दूरी को समाप्त कर उन्हें एक दूसरे के समीप लाता है, वहीं उनमें तनाव भी उत्पन्न करता है। अतः अमेरिकन अर्थशास्त्री **प्रो. थियोडोर लेविट** (1925–2006) के अनुसार हमें वैश्वीय तरीके से सोचना चाहिए और हमारे काम करने के तरीके स्थानीय अर्थात देशी होने चाहिए। तभी हम वैश्वीय और स्थानीय के तनाव को कम कर विश्व स्तर पर अपनी पहचान को कायम रख सकेंगे।

संदर्भ :

1- Bhagwati, Jagdish (2004), " In Defense of Globalization'. Oxford, NewYork : Oxford University.

2- Behrens, Henning (2010), " Globlization Vibtates The 21st Century Lithaus, Berline : Lithaus Uniedition.

3- Conversi, Daniele (2010), " The Limits of Cuttural Globalization ", Journal] of Critical Globalization Stadies.

4- Giddens, Anthony.(2006) " Sciology', Polity Press.

5- Gupta, Dipanker (2001), " Mistaken Modernity : India Betwean Worlds', Harper Collins India.

6- Pratheep, P.S. : "Globalization, Identity and Culture : Tribal Issues in India'.

7- Singh, Yogendra (2000), : "Culture Change in India', Rawat Publications, Jaipur

8- Sundaram.V. . : Impact of Globalization on Indian Culture'.

9- The India Economic Summit Report, 2009

10. दोषी. एस. एल. (2007), : "आधुनिकता, उत्तर आधुनिकता एवं नवसमाजशास्त्रीय सिद्धान्त" रावत पब्लिकेशन्स जयपुर.

11. रावत, हरिकृष्ण (2006), : "समाजशास्त्र विश्वकोष", रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर.

12. शर्मा, डॉ. जी. एल. एवं, डॉ. वाई. के. शर्मा (2008), "भारतीय समाज", यूनिवर्सिटी बुक हाऊस प्रा. लि., जयपुर.

13. शर्मा, डॉ. जी. एल. एवं, डॉ. वाई. के. शर्मा (2009),"आधुनिक भारत में सामाजिक समस्याएं", यूनिवर्सिटी बुक हाऊस प्रा. लि., जयपुर.